FEBRUARY' 18

03 Day 034-331 Wk-05 SATURDAY

बी॰ए॰ II हिन्दी ऑनर्स

हिन्दी साहित्य के आदिकाल के नामकरण पर विचार

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
एस॰एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

हिन्दी साहित्य का आदिकाल अनेक मत-मतान्तरों से ग्रस्त रहा है चाहे हिन्दी साहित्य के इतिहास के आरंभिक बिन्दु के निर्धारण का प्रश्न हो या उसके नामकरण का - इसमें मतैक्य का अभाव साफ-साफ देखा जा सकता है।

सर्वप्रथम मिश्र बंधुओं ने इस काल को आदिकाल का नाम दिया इसके पीछे उनका तर्क था कि यह हिन्दी साहित्य का आरंभिक काल है इसलिए इसे आदिकाल कहा जाना समीचीन है। इसके बाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रंथ में इस काल को वीरगाथा काल का नाम दिया इसके पीछे आचार्य का तर्क था कि जैन एवं नाथ साहित्य के धार्मिक ग्रंथों को यदि किनारे कर दिया जाए तो कुल बारह पुस्तकें ऐसी हैं जो उस काल में उपलब्ध होती हैं—

1. विजयपाल रासो
2. हम्मीर रासो
3. कीर्तिलता
4. कीर्ति पताका
5. खुमान रासो
6. बीसलदेव रासो
7. पृथ्वीराज रासो
8. जयचन्द प्रकाश
9. जयमयंक जस-चन्द्रिका
10. परमाल रासो
11. अमीर खुसरो की पहेलियां
12. विद्यापति पदावली

आ॰ शुक्ल की दृष्टि में उस काल में राजाश्रय में पलने वाले कवि अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में काव्य रचा करते थे जिसके रूप में उन्हें

पुरस्कार के नाना प्रकार के लाभ प्राप्त होते थे। चूंकि यह प्रवृत्ति पूरे साहित्य जगत में दिखलाई पड़ती थी अतः इस काल को उन्होंने वीरगाथाकाल का नाम दिया।

कालान्तर में शुक्लजी के इस नामकरण पर कई तो वाजिब प्रश्न उठने लगे। पहला प्रश्न तो यह उठा कि शुक्लजी की बारह ग्रंथों की सूची के प्रथम चार ग्रंथ — विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, कीर्तिलता और कीर्तिपताका — हिंदी की नहीं वरन् अपभ्रंश की रचनाएं हैं। शुक्लजी एक ओर तो अपभ्रंश की रचनाओं को हिंदी ~~नहीं मानते~~ की रचना नहीं मानते तो दूसरी ओर इसे हिंदी भी मानते हैं। पुरानी हिंदी के नाम पर उपर्युक्त रचनाओं को अपनी सूची में शामिल करना अपने समकालीन रचनाओं का अपमान है। दूसरी ओर स्वयं आचार्य शुक्ल ने खुमानरासो और बीसलदेवरासो को परवर्तीकाल की रचना माना है। बाद में शोध से यह स्पष्ट हो गया है कि ये दोनों रचनाएं पन्द्रहवीं शताब्दी के बाद की हैं। अतः इसे वीरगाथा काल में स्वीकृत नहीं किया जा सकता। उधर हम्मीर रासो के कुछ अंश प्राकृत पैंगलम् में उद्धृत हैं किंतु मूल रचना उपलब्ध नहीं है। वैसे ही जयमयंक जस चन्द्रिका एवं जयचंद्रप्रकाश भी नोटिस मात्र ही हैं। विद्यापति की पदावली हिंदी की ऐसी रचना है जिसमें वीरगाथा है ही नहीं। पृथ्वीराज रासो में भी प्रक्षिप्त अंशों की प्रचुरता है। ऐसे में वीरगाथाकाल के आधार ग्रंथों पर ही जब प्रश्नचिह्न उठ खड़े हुए हों तो उसके नामकरण पर तो स्वतः प्रश्न उठेगा। यही कारण है कि यह नाम सर्वमान्य नहीं हो सका।